ऋणनिर्देश

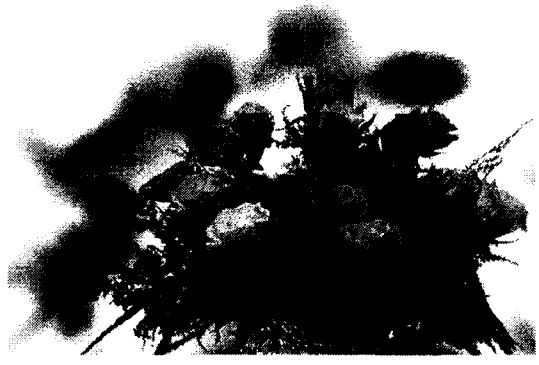

ऋणनिर्देश

हर कार्य की पूर्ति करने के लिए किसी-न-किसी प्रकार की सहायता किसी भी व्यक्ति से लेनी पड़ती है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति हेतू मेरी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में सहायता करनेवाले गुरूजनों एवं सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं मेरा प्रथम कर्तव्य समझता हूँ।

सर्व प्रथम इस शोध प्रबंध में जिनका सबसे अधिक योगदान रहा तथा शोध कार्य में मेरे मार्ग में सदैव मार्गदर्शक के रूप में मेरे पीछे सायें की तरह रहने वाली आदरणीय गुरूवर्या प्रा. डॉ. आशा मणियार जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य मानता हूँ। जिसके फलस्वरूप मेरा शोध कार्य आसानी से सफल बन गया। उनके सच्चे मार्गदर्शन से मैं सदैव प्रेरणा लेता रहूँगा।

इस शोध-विषय के संबंध में हमारे विश्वविदयालय के हिंदी विभाग की विभागाध्यक्षा आदरणीय पदमा पाटील मॅडमजी प्रेरक बनी रही। अत: उनके प्रति मैं कृतज्ञ रहूँगा। इस शोध विषय के संबंध में पढ़ने हेतु प्रेरित करने वाले तथा समय-समय पर मार्गदर्शक बने मेरे विश्वविदयालय के आदरणीय गुरूवर्य चव्हाण सर जी का भी इस शोध हेतू अमूल्य मार्गदर्शन रहा इस कारण उनके प्रति कृतज्ञता यापन करता हूँ। साथ ही आदरणीय शोभा निंबाळकर मॅडमजी के मार्गदर्शन के कारण उनके प्रति मैं ऋणी रहूँगा।

मेरे प्राथमिक, माध्यमिक स्कूल के सभी गुरूवर्यो के प्रति मैं कृतज्ञता यापन करता रहूँगा। इस शोध संदर्भ में तथा शिक्षा में आधार बने आदरणीय गुरूवर्य संजय चिखलकर सर जी का तह-ए-दिल से शुक्रगुजार रहूँगा जिन्होंने मुझे शिक्षा के संबंध में ज्ञान का दान ही न देकर आर्थिक बाधाओं में मुझे अपने बेटे के समान मदद की तो मैं आपका सदैव ऋणी रहूँगा। मेरे महावीर महाविद्यालय के प्राचार्य लवटे सर जी, मेरे

गुरूवर्य प्रा.राजेंद्र रोटे सर, प्रा. जोशी मॅडम तथा प्रा. जाधव मॅडमजी ने मेरे हिंदी विषय में ज्ञानवृद्धि कर मुझे शोध के लिए प्रेरित किया तो उनके प्रति कृतज्ञता यापन करना मेरा कर्तव्य मानता हूँ।

मेरे शोध संबंधी या शिक्षा के संदर्भ में सबसे श्रेष्ठ योगदान देनेवाले मेरे आदर्श माता-पिता है उनके कर्मों-फलों के परिणाम स्वरूप मैं शिक्षा क्षेत्र में सफल बन पाया। मुझे एम.फिल. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त करा देने में मेरे माता-पिता तथा भाई में सफल हो गए। अत: मेरी शिक्षा में उनका योगदान पहले स्थान पर रहता है। उनके प्रति मैं सदैव नतमस्तक होता हूँ और सदैव ऋणी बना रहना चाहता हूँ। यह मेरी चाह है और अंत तक बनी रहेगी।

इस उपाधि के संदर्भ में मुझे बच्चे जैसा प्यार देने वाले मेरे माता-पिता समान आधार देनेवाले मेरे जीजा हंबीरराव भारकर तथा बहन लता भारकर के प्रति सदैव नतमस्तक रहूँगा। उनके प्रेम का मैं सदैव ऋणी रहूँगा। कुडित्रेगाव की मेरी अन्य बहनों तथा जीजा, उनके सभी सास ससूर जिन्हों ने मेरी इस उपाधि में अहम भूमिका निभाई है उनका भी मैं सदैव ऋणी रहूँगा। उनके प्यार से सदैव लालायत रहूँगा। साथ ही हमारे स्नेही शिवाजी दत्तू भारकर जी ने भी मेरी शिक्षा में योगदान दिया उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

मेरी शिक्षा की प्रथम प्रेरणास्त्रोत मेरे व्यक्तित्व में नया उभार लाने वाली शिल्पा मॅडमजी को तो मैं मरते दम तक नहीं भूल पाऊँगा। वह मेरी शिक्षा में सदैव प्रेरक बनी रही, उनकी बदौलत तो मैं शिक्षा प्राप्त कर सका तो उनके प्रति तह-ए-दिल से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

इसके साथ मेरे इस शोध प्रबंध के लिए मेरे प्रेरणास्त्रोत, साथ ही आर्थिक तथा मानसिक सहयोग देनेवाले मेरे चाचा स्मृतिशेष बचाराम कांबळे जी के प्रति सदैव नतमस्तक होता रहूँगा। जिनकी कृपा दृष्टि से संकट काल में भी मेरी इस उपाधि में

आर्थिक सहयोग मिला मेरे मित्र परमस्नेही ऋषिकेश गाडेकर के आर्थिक सहयोग के लिए उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

मेरे परिवार के सभी भाई-भाभियों तथा चाचा-चाचियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनका इस उपाधि में कुछ ना कुछ योगदान रहा है। साथ ही मेरे विचारों में परिवर्तन लाने वाले तथा शिक्षा में मार्गदर्शक बने आदरणीय बौद्धवादी गुरूवर्य आयु. नामदेव गुरूजी तथा आयु.के.आर.कांबळे जी के ज्ञान के बदौलत मुझे शिक्षा में प्रेरणा मिली तो उनके प्रति भी सदैव कृतज्ञ रहूँगा।

इसके साथ ही मैं कुडित्रे गांव तथा राशिवडे खुर्द गांव के मेरे सभी सहयोगी मित्रों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनका थोड़ा बहुत योगदान इस उपाधि में मुझे मिला। इसके साथ शिव, शाहू, फूले, अम्बेड़कर के विचारो के मेरे विश्वविद्यालय के सभी मित्र, प्राध्यापक वर्ग के योगदान के लिए मैं सदैव कृतज्ञ बना रहूँगा। इसके संदर्भ में मुझे शोध हेतू किताबों तथा ग्रंथालय की सुविधा देने वाले शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल तथा अन्य सेवक वर्ग का कृतज्ञ रहूँगा।

जिनके कारण मेरा यह शोध प्रबंध समय पर टंकित हो पाया वे मेरे परममित्र अविनाश तथा अरूण कांबळे इन दोनों के प्रति भी मैं सदैव ऋणी रहूँगा

इस प्रकार इस कार्य पूर्ति हेतू प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग देनेवाले सभी गुरूजनों, सहयोगी, स्नेही, मित्र तथा हितचिंतक तथा गलती से बचे हुए पुन:श्च मेरे मित्र सहयोगी के प्रति कृतज्ञता प्रस्तुत करना मेरा कर्तव्य मानता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 02/05/2009

शोध छात्र

(कांबळे श्रावण आबा)